



# इंदिरा किसान मितान



कृषि विज्ञान केन्द्र बिलासपुर, इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

वर्ष -14

अक्टूबर, नवंबर, दिसंबर 2012

अंक -59



हर कदम, हर डगर  
किसानों का ह्रदयसपर्श  
आरतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch

## संपादक मण्डल

संरक्षक

**डॉ. एस.के. पाटिल**

कुलपति,  
इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय,  
रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक

**डॉ. जे. एस. उरकुरकर**

निदेशक विस्तार सेवाएं,  
रायपुर (छ.ग.)

उत्प्रेरक

**डॉ. अनुपम मिश्रा**

आंचलिक परियोजना निदेशक  
जोन-7, भा.कृ.अनु.प.,  
जबलपुर (म.प्र.)

सह उत्प्रेरक

**डॉ. सी. आर. गुप्ता**

अधिष्ठाता  
कृ. महा., बिलासपुर (छ.ग.)

प्रकाशक

**डॉ. राम निवास शर्मा**

कार्यक्रम समन्वयक,  
कृ. वि. केन्द्र, बिलासपुर

संपादक

**डॉ. दिनेश कुमार शर्मा**

प्रमुख वैज्ञानिक  
कृषि प्रसार शिक्षा, कृ. वि. केन्द्र

सह-संपादक

**श्रीमती निवेदिता पाठक**

तकनीकी सहायक, कृ. वि. केन्द्र

किसानों का मितान - कृषि विज्ञान केन्द्र



## रबी फसलों में बीजोपचार का महत्व एवं रोगनियंत्रण

फसलों में बीजों के द्वारा विभिन्न प्रकार के रोग एक वर्ष से दूसरे वर्ष में तथा एक स्थान से दूसरे स्थान में फैलते हैं। रोगजनक कारक बीजों के सतह पर एवं बीजों के अंदर रहते हैं इसलिए बीज से फैलने वाले रोगों से बचाने के लिए बीजों को उपचारित कर इस्तेमाल करना अत्यंत आवश्यक होता।

बीजोपचार से लाभ :-

1. अनुपचारित बीज से विभिन्न फफूंद मिट्टी में पहुंच जाती है जिससे बीजांकुर कम हो जाते हैं। बीजोपचार कर बीज बोने से यह फफूंद नष्ट हो जाती है।
2. उपचारित बीज के चारों ओर फफूंदनाशक दवा की परत से खेत की मिट्टी में पहल से उपस्थित फफूंदों से सुरक्षा होती है।

फसल	रोग	दवा एवं मात्रा
गेहूँ	कंडुआ, बंट, छिदरा	वीटावेक्स 2-2.5 ग्रा./कि.ग्रा. बीज, थायरम या डायथेन एम-45 3-3.5 ग्रा./किलो बीज
दलहनी	बीज सड़न, जड़ सड़न, कालर सड़न, उकठा	थायरम 3-3.5 ग्रा./किलो बीज या थायरम 2 ग्रा. एवं बाविस्टिन 1 ग्रा./किलो बीज
अलसी	बीज सड़न, जड़ सड़न, कालर सड़न, उकठा	थायरम 3-3.5 ग्रा./किलो बीज बाविस्टिन 1.5-2 ग्रा./किलो बीज
आलू	कंद सड़न, अंकुर गलन	डायथेन एम-45 3-3.5 ग्रा./किलो बीज
गन्ना	लाल सड़न, कंडुआ	डायथेन एम-45 3-3.5 ग्रा./किलो बीज
कुसुम, सरसों, सूरजमुखी, मुंगफली	बीज एवं जड़ सड़न	बाविस्टिन 2-3 ग्रा./किलो बीज

विनोद निर्मलकर, डॉ.डी.के. शर्मा एवं डॉ. आर.एन. शर्मा

विस्तृत जानकारी हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र से सम्पर्क करें।

डॉ. रामनिवास शर्मा (कार्यक्रम समन्वयक)



## रबी फसलों की उत्पादन तकनीक

फसल का नाम	बुवाई का उचित समय	बीज की मात्रा कि.ग्रा./हे.	उर्वरक की मात्रा कि.ग्रा./हे.			औसत उपज क्वि./हे.
			नत्रजन	स्फुर	पोटाश	
गेहूँ : अर्धसिंचित	मध्य अक्टू. से मध्य नव.	40	60	40	20	15-20
गेहूँ : पूर्ण सिंचित (समय से बुवाई)	5 नव.से 25 नव. तक	40	100	50	30	35-40
गेहूँ : पूर्ण सिंचित (देर से बुवाई)	25 नव.से 15 दिसम्बर	50-55	30	20	10	35-40
चना	15अक्टूबर-15 नवम्बर	100	20	50	20	15-20
मसूर	15अक्टूबर-15 नवम्बर	छोटे दाने 25-30 बड़े दाने 40	असिंचित 15 सिंचित 20	30 50	- 30	10-15
मटर	15अक्टूबर-15 नवम्बर	80-100	असिंचित 22 सिंचित 25	30 60	- 30	55-60
राई-सरसों	अक्टूबर के प्रथम सप्ताह से 15 नवम्बर तक	5-6	असिंचित 30 सिंचित 80	20 40	40 20	20-22
सूरजमुखी	रबी अक्टूबर-नवम्बर	10-15	असिंचित 40 सिंचित 80	40 60	30 40	10-15
कुसुम	असिंचित : सितम्बर के अंतिम सप्ताह से अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तक सिंचित : मध्य अक्टूबर के बाद	15-20	असिंचित 30 सिंचित 40	20 30	- 10	12-15
गन्ना	अक्टूबर-नवम्बर	1,25,000 आंखें/100 क्विंटल	300	80	60	95-110

श्रीमती शिल्पा कौशिक, डॉ. आर.एन. शर्मा, डॉ. डी.के. शर्मा, डॉ. किरण गुप्ता

## रबी सब्जियों की कृषि कार्यमाला

सब्जी	प्रजाति/किस्म	बोने का समय	बीज दर प्रति हे.	कतार/पौधे से दूरी	खाद की मात्रा/हे.				औसत उत्पादन क्वि./हे.
					नत्रजन कि.ग्रा.	स्फुर कि.ग्रा.	पोटाश कि.ग्रा.	गोबर खाद टन	
आलू	अगेती - कुफरी चन्द्रमुखी (75 दिन) कुफरी अशोका कुफरी जवाहर मध्यम - कुफरी सतलज (90 दिन) कुफरी पुखराज कुफरी बादशाह	अक्टूबर - नवम्बर	25-35 क्वि./हे.	60X60 से.मी.	150	80	100	25	अगेती 200-250 मध्यम/पिछली 300-350
टमाटर	पूसा रूबी, पूसा गौरव, अर्का बहार, अर्का विकास	जून-जुलाई अक्टूबर-नवम्बर	150-500 ग्रा.	60X45 से.मी.	100	50	50	25	250-500
पत्ता गोभी	गोल्डन एकर, प्राइड आफ इंडिया, कोपिनहेगन मार्केट, पूसा मुक्ता	अगस्त-अक्टूबर	500-700 ग्रा.	60X45 से.मी.	50-70	50-120	50-90	15-20	300-450
फूलगोभी	पूसा केतकी, पंत गोभी-3, पूसा शरद, पूसा दीपाली, पंत सुभ्रा	अगेती - मई-जून मध्यम - जुलाई देरी - अगस्त-सितम्बर	500-700 ग्रा.	अगेती-45X30 से.मी. मध्य/देर - 60X45 से.मी.	50-120	40-50	40-50	30-40	200-300
गांठगोभी	लार्ज ग्रीन, वाइट वेनिया, परपल वेनिया	अगस्त - अक्टूबर	1 कि.ग्रा.	30X30 से.मी.	100	60	100	10-15	200-250
मूली	पूसा चेतकी, पूसा रेश्मी, पंजाब सफेद, पूसा हिमानी, पूसा देशी	अगस्त-सितंबर	10-12 कि.ग्रा.	45x45 से.मी.	50-60	50	50	25-30	150-200
गाजर	पूसा केसर, पूसा मेघाली, पूसा यमदागिनी	सितंबर-नवंबर	5-6 कि.ग्रा.	45x45 से.मी.	50-60	25-50	80-120	25-30	250-300
प्याज	पूसा रेड, पूसा रतनाकर, नासिक रेड, अर्का बिंदू, अर्का कल्याण, अर्का पितांबर, अर्का कीर्तीमान	अक्टूबर-नवंबर	8-10 कि.ग्रा.	20x10 से.मी.	80-100	80-120	80-100	25-30	250-300
लहसून	गोदावरी, श्वेता, पूसा सलेक्सन-10, एग्रीफाउण्ड पार्वती	अक्टूबर-नवंबर	350 से 500 कि.ग्रा. अंगुलिकांए	15x10 से.मी.	100-150	40-60	30-80	25-30	40-100
बैंगन	पूसा पर्पल लॉग, पूसा पर्पल राउंड, पंत सम्राट, अर्का कुसुमकर, पंत रितुराज	जून-जुलाई सितंबर-अक्टूबर	250-500 ग्रा.	60x60से.मी.	100	50	50	20-25	450-900

देवेन्द्र उपाध्याय, डॉ.डी.के. शर्मा, डॉ. आर.एन. शर्मा, श्रीमती शिल्पा कौशिक

किसानों का मितान - कृषि विज्ञान केन्द्र

## उत्तरा पद्धति में अधिक उत्पादन लेने के लिये उन्नत तकनीकी

धान की फसल के कुल क्षेत्रफल का लगभग 20 प्रतिशत उत्तरा फसल पद्धति में आता है। इस पद्धति में अवशेष नमी का उपयोग करते हुए रबी फसल की बुवाई धान की खड़ी फसल में की जाती है। इस पद्धति में अधिक उत्पादन लेने हेतु निम्न सिफारिशें अपनाई जानी चाहिये -

1. धान की उन्नत उत्पादन तकनीक अपनार्यें। धान फसल में उचित अंतराल में निंदाई करें। जिससे उत्तरा फसल से अधिक उत्पादन लिया जा सके। 20 प्रतिशत स्फुर चरवक की अतिरिक्त मात्रा दें। जिस खेत में उत्तरा फसल ली जाती है वहां नील हरित काई नहीं होनी चाहिये। खेत का पानी समय-समय पर बदलें। उत्तरा फसल की बुवाई के 20-25 दिन के भीतर धान की कटाई करें।
2. तिवड़ा के अतिरिक्त उत्तरा फसल के रूप में चना, मसूर, अलसी, सरसों, चर्द, मूंग को भी लिया जा सकता है।
3. उत्तरा फसल हेतु अनुशंसित बीज दर से 25 प्रतिशत अधिक बीज दर का प्रयोग करें।
4. बीज को थायसम या वाकिरडीन 3 ग्राम एवं दलहनी फसलों को राइजोबियम कल्चर 5 ग्राम प्रति किलो बीज से उपचारित करके बोएं।
5. उत्तरा फसल की बुवाई अक्टूबर के तीसरे सप्ताह में या धान फसल में फूल आने के दो सप्ताह बाद करें।
6. उत्तरा फसल हेतु 10 किग्रा नत्रजन प्रति हे. की दर से प्रयोग करें।
7. सिंचाई सुविधा उपलब्ध होने पर एक सिंचाई अवश्य करें।
8. आवश्यकतानुसार पौध संरक्षण करें।

डॉ.विनप्रता जैन, डॉ.आर.एन. शर्मा, डॉ.डी.के. शर्मा, श्रीमती निवेदिता पाठक

### सेवारत कर्मचारियों के लिये प्रशिक्षण

	विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
कृषि अधिकारी	03	03	43	03	03	40
आंगनबाड़ी सहायिका	—	—	—	02	04	30
कृषक संगवारी	28	28	1004	—	—	—

### प्रक्षेत्र अनुसंधान परीक्षण

फसल	विगत तीन माह की गतिविधियां	
	परीक्षण	लाभान्वित
धान में हरी खाद का मूल्यांकन कुपोषण से बचाव (3-5 वर्ष के बच्चे)	04	04
धान में त्रिफाल बियासी का मूल्यांकन	04	04
धान में अंबिका पैडी वीडर का मूल्यांकन	04	04
धान में खरपतवारनाशी का मूल्यांकन	04	04

### अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

फसल	विगत तीन माह की गतिविधियां	
	लाभान्वित	क्षेत्र / हे.
1. अरहर राजीव लोचन ICAR	20	5.0
2. अरहर राजीव लोचन AICRP	10	2.0
3. तिल टी.के.जी. 306	14	5.0
4. धान इंदिरा महेश्वरी (श्री पद्धति)	23	23.0 एकड़
5. धान सुगंधित	10	—
6. गृह वाटिका	12	0.4 एकड़

## कटाई हेतु उपयोगी कृषि यंत्र

### कटाई हेतु कृषि यंत्रों की उपयोगिता -

कृषि के सभी कार्य समय पर किये जाये तो पैदावार अच्छी मिलती है। धान फसल पककर तैयार हो जाने पर उसकी कटाई एक मुख्य क्रिया है। सही समय पर फसल की कटाई करने से दाने की गुणवत्ता एवं उत्पादकता पर अच्छा प्रभाव पड़ता है और रबी फसल की बुवाई के लिये पर्याप्त समय मिल जाता है।

**कटाई का समय -** धान फसल के दाने में 20-22 प्रतिशत नमी उपस्थित रहे और 80 प्रतिशत बालियां तथा तने पीले पड़ जायें तो फसल की कटाई कर लेना चाहिये। ज्यादा देर से कटाई करने पर फसल के गिरने और बालियों से दाना झड़ने का अंदेशा रहता है।

### कृषि यंत्र -

1. दांतेदार उन्नत हसियां
2. पावर रीपर
3. ट्रेक्टर चलित रीपर

### यंत्र की क्षमता -

- 0.2 हेक्टर/दिन
- 4-5 एकड़/दिन
- 1 एकड़/घंटा

ई.यू.के. ध्रुव

### कृषक व कृषक महिलाओं के लिये प्रशिक्षण

विषय	विगत तीन माह की गतिविधियां			आगामी तीन माह की गतिविधियां		
	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
फसल उत्पादन	02	02	27	03	06	45
कृषि विस्तार	04	04	45	03	06	45
गृह विज्ञान	01	02	08	03	06	45
कृषि अभियांत्रिकी उद्यानिकी	02	02	40	03	06	45
पौधरोग	—	—	—	03	06	45
	—	—	—	03	06	40



धान फसल में त्रिफाल बियासी यंत्र का परीक्षण - ग्राम लालपुर (कोटा)



अरहर किस्म राजीव लोचन पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन ग्राम भैंसाझार (कोटा)



धान फसल में अंबिका पैडी वीडर का परीक्षण ग्राम बछालीखुर्द (कोटा)



किसानों का मितान - कृषि विज्ञान केंद्र

# सामयिक सलाह - 2012

## अक्टूबर

### फसलोत्पादन :

1. धान की फसल पकते समय खेत से पानी निकाल दें। अगेती फसल के 80% दाने पीले पड़कर कड़े हो जायें तो कटाई करें।
2. अच्छी तरह तैयार खेत में शीतकालीन मक्का, आलू, चना, मटर, मसूर, सरसों व अलसी की बोवाई बीजोपचार कर संपन्न करें।
3. असिंचित अवस्था में उर्वरक की पूरी मात्रा बोआई के समय डालें।
4. खेत में दलहनी फसल पहली बार लेना हो तो बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करना आवश्यक है।

### उद्यानिकी :

1. शीतकालीन सब्जियों के पौध तैयार करें।
2. आम में हार्मोन एन.ए.ए. 200 मि.ग्रा.प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
3. आंवला में 0.8% बोरैक्स का छिड़काव करें।
4. मटर की उन्नत फिर्मों आर्किल, बोनविला, जवाहर मटर-1 भी बुआई करें।
5. पत्तेदार सब्जियाँ जैसे -पालक, मेथी, धनियाँ इत्यादि की बुवाई करें।
6. शीतकालीन पुष्प की बुआई करें।
7. गुलाब में कटाई -छटाई कर बोर्डो पेस्ट लगावें एवं 15 दिन के बाद खाद एवं रोज मिक्चर दें।

### पशुपालन :

1. खुरपका, मुँहपका बीमारी से बचाव हेतु दुधार पशुओं में टीकाकरण करावें एवं 15 दिन बाद उन्हीं पशुओं को पोकनी का भी टीका लगावा दें।
2. मुर्गियों को सामूहिक रूप से दवा पान करावें।

## नवम्बर

### फसलोत्पादन :

1. सिंचित गेहूँ की बुआई 15 नवंबर के बाद करें।
2. धान की कटाई के बाद सिंचित नमी में चना, अलसी, मसूर, कुसुम की बुआई करें।
3. बुआई के लिये कूड़नागर या जीरो सीडड्रिल का प्रयोग करें। ऋत्तसलों को काटकर खेत में एक -दो दिन सूखने पर ही बोझा बनाकर खलिहान में एकत्रित करें।

### उद्यानिकी :

1. फलोद्यान में मिली बग के प्रकोप को रोकने के लिये ग्रीस की पट्टी लगायें तथा जमीन में 250 ग्राम फालीडाल डस्ट का भुरकाव करें।
2. मटर में पाउडरी मिल्ड्यू की रोकथाम हेतु केराथेन 0.15% या सल्फेक्स 0.2% घोल का छिड़काव करें।
3. आलू में झुलसा रोग के नियंत्रण के लिये डायथेन एम 45 दवा का 0.25% घोल का छिड़काव 15 दिन के अंतर पर दो बार करें।
4. महिने के अंत में अगेती आलू की बोवाई हेतु तैयारी करें।
5. बेल वाली सब्जियों में लकड़ी का सहारा दें।

### पशुपालन :

1. पशुओं को रात में खुले स्थान में नहीं रखें। उनके खाने में एक चम्मच नमक का मिश्रण अवश्य दें। सूखे चारे के साथ हरा चारा भी खिलायें।

**प्रस्तुत लेखों पर संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। ये लेखक के स्वयं के विचार हैं-संपादक**

## दिसम्बर

### फसलोत्पादन :

1. गेहूँ में नत्रजन की मात्रा दें तथा सिंचाई करें।
2. गेहूँ बुवाई शेष हो तो इस माह में पूरी करें।
3. लूसर्न व बरसीम चारे की 30-35 दिन के अंतराल पर कटाई कर सिंचाई करें। ध्यान रहे कि चारे की कटाई जमीन से 10 से.मी. छोड़ कर करें। गर्मी में उपयोग हेतु लूसर्न, बरसीम चारे का संरक्षण करें।
4. गन्ने की कटाई कर गुड बनावे या बाजार में बेजें।

### उद्यानिकी :

1. आलू में पिछेली झुलसा रोग के लक्षण दिखने पर डायथेन एम 45 दवा का छिड़काव करें। 15 दिन बाद दूसरा छिड़काव करें।
2. आलू में कंद भूमि से बाहर दिखने लगे तो शीघ्र ही मिट्टी चढ़ा दें। माध्यम समय वाली गोभी की रोपाई करें।
3. तरबूज, खरबूज, लौकी, करेला, ककड़ी एवं कदू लगाने हेतु खेत की तैयारी करें तथा बीज को पॉलीथिन की थैली में बोआई करें।
4. गोभी की अगेती फसल में निदाई-गुड़ाई कर नत्रजन 50 किग्रा. प्रति हे. दें।
5. धनिया, मेथी की फसल पर चूर्णी फफूंद के बचाव हेतु 0.2% सल्फेक्स का छिड़काव करें।
6. प्याज, लहसुन में सिंचाई तथा निदाई करें। परपल ब्लाच नामक रोग के नियंत्रण हेतु ब्लाइटाक्स-50 या डायथेन एम 45 नामक फफूंद नाशक दवा का छिड़काव 15 दिन के अंतर पर दो बार करें।

### पशुपालन :

1. अंडा देने वाली मुर्गियों को संतुलित आहार खिलायें।

## गेहूँ उत्पादन की उन्नत तकनीक

उपयुक्त किस्में :- उत्पादन तकनीक की मुख्य आधार उन्नतशील जातियों का चयन है। इस क्षेत्र के लिए प्रमुख किस्में हैं -

पूर्ण सिंचित- समय से बुवाई- लोक-1, डब्ल्यू.एच.-147, कंचन, राज, एच.आई.-8381, जी. डब्ल्यू.- 273

गेहूँ पूर्ण सिंचित- देर से बुवाई- जी. डब्ल्यू.- 173, डी.एच. 788-2(विदिशा) लोक-1 असिंचित- सी.306, सुजाता, एच. डब्ल्यू. 2004

भूमि की तैयारी :- एक सबसे महत्वपूर्ण पहलू इस क्षेत्र के लिए है क्योंकि खेती प्रमुख रूप से वर्षा आधारित है। इस अंचल में धान की फसल पकने के बाद भी कटाई एवं ढुलाई में विलंब किया जाता है कटाई के बाद भी फसल खेत में रहती है अतः तब तक खेत की नमी समाप्त हो जाती है और खेत की तैयारी समय पर नहीं हो पाती इसके लिए कटाई के तुरंत बाद धान उठाकर खेत की दो तीन जुताई करें एवं पाटा चलाकर खेत को भुरभुरा एवं समतल बना लें तत्पश्चात बुवाई करें।

बुवाई का समय एवं विधि :- समय से बुवाई के लिए असिंचित अवस्था में अक्टूबर आखिरी सप्ताह से नवंबर प्रथम सप्ताह तक कर लेनी चाहिए। सिंचित अवस्था में बुवाई 15 दिसंबर तक की जा सकती है। बोनी के लिए कूड़े के बीच की दूरी 20-22 से.मी. रखें तथा बीज 5-6 से.मी. गहराई पर बोए। जहाँ तक संभव हो बुवाई सीडड्रिल से कर दें।

बीज दर :- समय से बुवाई करने पर एक हेक्टेयर क्षेत्र में 100 किलोग्राम बीज उपयोग में लाए। देर से बुवाई करने के लिए बीज की मात्रा बढ़ा कर 125 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर कर दें।

उर्वरकों का प्रयोग- असिंचित अवस्था में 40 कि.ग्रा. नत्रजन एवं 20 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं 20 कि.ग्रा. पोटाश खेत में मिला दें। सिंचित अवस्था में 80-100 कि.ग्रा. नत्रजन, 50-60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं 30-40 कि.ग्रा. पोटाश देना चाहिए। सिंचित अवस्था में सिफारिश की गई नत्रजन का 1/3 बुवाई के समय, 1/3 20-25 दिन बाद तथा 1/3 मात्रा 50-65 दिन बाद अधिकतम कल्ले फटने की अवस्था में देना चाहिए। फॉस्फोरस एवं पोटाश की संपूर्ण मात्रा बुवाई के समय दें। सड़ी हुई गोबर की खाद जुताई के समय 5 टन/हेक्टेयर मिलाने से गेहूँ की अधिक उपज प्राप्त होती है।

खरपतवार नियंत्रण :- नींदा फसल की उपज को अत्याधिक प्रभावित करते हैं खेतों में खरपतवार की उपस्थिति का अर्थ है उपज में कमी। यदि 2,4 डी सक्रिय तत्व /हे. 500 ग्राम अथवा मेटासलफ्यूरान 4 ग्राम सक्रिय तत्व /हे. की दर से बरनी के 20-25 दिन बाद छिड़काव करें। सकरी पत्ती वाले नींदा जैसे जंगली जौ गेहूँ का मामा का प्रकोप बाद यानि अंकुरण पूर्ण अवस्था बोनी के 25-30 दिन बाद 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करने से नींदा नियंत्रित होते हैं। यह चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों को भी नियंत्रित करता है तथा उपज में वृद्धि होती है।

सिंचाई :- सिंचित गेहूँ में फसल की क्रांतिक अवस्थाओं में सिंचाई करने से पानी की बचत एवं ज्यादा उपज प्राप्त होती है अतः पहली सिंचाई 21 दिन में, दूसरी 45 दिन में, तीसरी 65 दिन में, चौथी 85-90 दिन में, पांचवी 110-115 दिन में सिंचाई करें इस क्षेत्र में पाँच सिंचाईयों पर्याप्त होती है।

भारत शासन सेवार्थ

सेवा में,  
श्रीमान/डॉ. \_\_\_\_\_

बुक-पोस्ट

प्रेषक -

कार्यक्रम समन्वयक

कृषि विज्ञान केन्द्र, बिलासपुर (छ.ग.)

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

कार्यक्रम समन्वयक

कृषि विज्ञान केन्द्र, सरकण्डा, बिलासपुर (छ.ग.)

फोन : (07752) 255024

किसानों का मितान - कृषि विज्ञान केन्द्र

सदस्यता शुल्क 25 रु. वार्षिक